Dr Vijay Pratap Singh **23-11-2020**
Department of Psychology
BMA College. Baheri, Darbhanga.
D(II)H Paper II-Psychopathology

Topic: **देहरूपी विकार**

देहरूपी विकार

देह का अर्थ शरीर होता है और देहरूपी विकारों में चिन्ता पर आधारित मनस्तापी प्रतिदर्श होते है जिसमें व्यक्ति कई प्रकार के शारीरिक लक्षणों को प्रस्तुत करता है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है जैसे उस व्यक्ति को शारीरिक समस्या है परन्तु इन लक्षणों अथवा समस्याओं का काई अंगिक आधार नहीं मिलता है।

देहरूपी विकारों की मुख्य विषेषता विभिन्न शारीरिक लक्षणों को बार - बार प्रस्तुत किया जाना है परन्तु किसी प्रकार की जाँच एवं परीक्षणों पर भी उनका कोई शारीरिक आधार नहीं मिलता है। मुख्य रूप से देहरूपी विकार इस प्रकार के होते है-

1. दैहिकीकरण विकार (Somatization Disorder)
2. रोग भ्रमी विकार (Hypochondrial Disorder)
3. देहरूपी स्वचालित अकार्यता (Somataform Otonomic Dusfunction)
4. पीड़ा विकार (Pain Disorder)
5. शरीर दुष्क्रिया आकृति विकार (Body Dysmorphic Disorder)

दैहिकीकरण विकार -

इस विकार में अनेकानेक पुनरावर्तक एवं बारम्बार परिवर्तनशील शारीरिक लक्षण , रोगी में पूर्व कई वर्षो से विद्यमान होता है। दैहिकीकरण विकार में कम से कम आठ तरह के लक्षण निश्चित रूप से होते है जो इस प्रकार है-

1. **चार तरह के दर्द के लक्षण -** इसमें दर्द सिर, पेट, पीठ, छाती, पेशाब करने के दौरान, मासिक धर्म के दौरान, लैगिंक क्रिया के दौरान आदि में से किसी चार से सम्बद्ध हो सकता है।

Dr Vijay Pratap Singh **23-11-2020**
Department of Psychology
BMA College. Baheri, Darbhanga.
D(II)H Paper II-Psychopathology

Topic: **देहरूपी विकार**

2. **दो आमाशयांत्र लक्षण -** कम से कम दो आमाशयांत्र (Gestrointestinal) लक्षण जैसे - मिचले, के, डायरिया, पेट फूलना आदि अवश्य हुए हों।
3. **एक लौंगिक लक्षण -** इसमें कम से कम एक लैगिक लक्षण जैसे लैगिक तटस्थता (Sexual indefference) स्खलन समस्याएँ (Ejacalatory problem) अनियमित मासिक स्राव, मासिक स्राव में अत्यधिक रक्त निकलना आदि अवश्य हुए हो।
4. **एक कूटस्नायविक लक्षण -** कम से कम एक कूटस्नायविक (pseudoneuroligical) लक्षण जैसे अंधापन द्विदृष्टि, बहरापन, स्पर्श संवेदना की कमी, विभ्रम, पक्षाघात, कंठ में दर्द या खाते समय निगलने में कठिनाई आदि अवश्य हुए हो।

रोगभ्रमी विकार -

इस विकृति में व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के बारे में जरूरत से ज्यादा सोचता है तथा उसके बारे में चिंता करता है। उसके मन में अक्सर यह घात बनी रहती है कि उसे कोई न कोई शारीरिक व्याधि या बिमारी हो गई है और उसकी यह चिंता इतनी अधिक हो जाती है कि वह अपने दिन प्रतिदिन की जिंदगी के साथ समायोजन करने में असमर्थ रहता है। इस तरह की चिंता व्यक्ति में कम से कम छ: महीने तक बने रहने पर ही उसे रोगी भ्रम विकार की श्रेणी में रखा जा सकता है अन्यथा नहीं। इस विकृति में रोगी की शिकायत किसी एक अंग विषेष तक सीमित नहीं रहती है। कभी - कभी उन्हें लगाता है कि पेट में भयानक रोग हो गया है तो कभी - कभी उनके सिर में गड़बड़ी नजर आती है। इसी तरह से उन्हें अपने यौन अंगों में किसी ढंग का शारीरिक रोग होने की खौफनाक चिंता होती है। जब ऐसे रोगियों से उनके लक्षण के बारे में विस्तृत रूप से पूछ - ताछ की जाती हैं। तो वे उसकी सही-सही वर्णन करने में असमर्थ रहते है। मेडिकल परीक्षण से जब यह बात स्पष्ट हो जाती हे कि वास्तव में उनकी आशंकाएँ निराधार है तो भी उन्हें यह विश्वास नहीं होता है कि उनमें कोई रोग नहीं है। बल्कि वे मेडिकल परीक्षणों में कुछ कमी रह जाने की बात करते है आधुनिक अध्ययनों से यह पता चला है कि यह रोग महिलाओं एवं पुरूषो में लगभग समान ढंग से होता है।

Dr Vijay Pratap Singh **23-11-2020**
Department of Psychology
BMA College. Baheri, Darbhanga.
D(II)H Paper II-Psychopathology

Topic: **देहरूपी विकार**

पीड़ा विकार -

इस विकृति में रोगी गंभीर या स्थायी तौर पर दर्द का अनुभव करता है जबकि इस तरह के दर्द कोई दैहिक आधार (Physical basis) नहीं होता है। इस तरह का दर्द प्राय: हृदय या अन्य महत्वपूर्ण अंगों के क्षेत्र में सम्बद्ध होता हे। गहन मेडिकल जाँच में ऐसे रोगियों के दर्द का कोई भी स्पष्ट आधार व विकृति नहीं मिलती है। सामान्यत: इस तरह के दर्द की उत्पत्ति का सम्बन्ध किसी प्रकार के संघर्ष या तनाव से होता है या जब व्यक्ति किसी दुखद परिस्थिति से छुटकारा पाना चाहता है या अन्य लोगों की सहानुभूति या ध्यान को अपनी ओर खींचना चाहता है, तो इस तरह को दर्द व्यक्ति में उत्पन्न होते देखा गया है। मनश्चिकित्सकों का मत है कि इस रोग के निदान में काफी दिक्कत इसलिए होती है क्योंकि दर्द एक पूर्णत: आत्मनिष्ठ अनुभूति है जो मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित होने वाली घटना है। अत: यह पहचान करना मुश्किल हो जाता है कि व्यक्ति में हाने वाला दर्द का स्वरूप कायप्रारूप (Somatoform) है या वह वास्तविक दर्द है।

शरीर दुष्क्रिया आकृति विकार -

इस विकृति में रोगी को अपने चेहरे में कुछ कल्पित दोष (Imagined defect) उत्पन्न हो जाने की आशंका उत्पन्न हो जाती है। जैसे सम्भव है कि रोगी को यह विश्वास हो जाए कि उसके नाम का आकार दिनों दिन बढ़ा होता है या होता जा रहा है, या उसके ऊपरी होंठ ऊपर की दिशा में तथा निचली होंठ नीचे की दिशा में लटकता जा रहा है। इस तरह के कल्पित दोष से वह इतना अधिक चिंतित रहता है कि उसके दिन प्रतिदिन के सामाजिक जिंदगी में काफी परेशानी आ जाती है और समायोजन सम्बद्ध समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। इस तरह की विकृति से संबद्ध कम शोध किये गये है। इस तरह की विकृति वाले अधिकतर रोगी यूरोपियन एवं एशियन देशों के मानसिक अस्पतालों में कुछ देखने को मिले है। अमेरिका में इस तरह के रोग न के बराबर देखे गए है। यही कारण है कि कई मनचिकित्सकों में इस बात पर मतभेद है कि इसे कायप्रारूप विकृति (Somatoform disorder) का एक स्वतंत्र प्रकार माना जाए या नहीं।